Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.S.W.-7

वैयक्तिक कार्य एवं परामर्श : व्यक्तियों के साथ कार्य करना

(Case Work and Counselling: Working with Individuals)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Rama Singh*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

वैयक्तिक कार्य एवं परामर्श : व्यक्तियों के साथ कार्य करना

(Case Work and Counselling: Working with Individuals)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-5

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. भारतीय संदर्भ में सामाजिक वैयक्तिक कार्य का अभ्यास 1
(Social Case Work Practice in Indian Context)

2. सेवार्थी को समझने के लिए व्यवहारगत अवधारणाएँ 6
(Behavioural Concepts for Understanding the Clients)

3. सामाजिक वैयक्तिक कार्य का कार्यक्षेत्र : 11
संबोधित की जाने वाली समस्या की प्रकृति
(Scope of Social Work: Nature of Problems to be Addressed)

4. वैयक्तिक कार्य के घटक (Components of Case Work) 16

5. वैयक्तिक कार्यकर्त्ता-सेवार्थी संबंध एवं वैयक्तिक कार्य के सिद्धांत 27
(Case Worker-Client Relationship and Principles of Case Work)

6. सहायता करने की सहायक तकनीकें (Supportive Techniques of Helping) 38

7. सामाजिक वैयक्तिक कार्य प्रक्रिया 42
(Social Case Work Process)

8. वैयक्तिक कार्य के उपकरण (Tools of Case Work) 49

9. वैयक्तिक कार्य में कुछ सैद्धांतिक विचार मार्ग 57
(Some Theoretical Approaches in Case Work)

10. परामर्श की जानकारी (Introduction of Counselling) 61

11. परामर्श प्रक्रिया (Counselling Process) 68

12. परामर्श में प्रयोग की जाने वाली सहायक और व्यावहारिक विधियाँ 74
(Supportive and Behavioural Techniques in Counselling)

13. परामर्श में प्रयोग की जाने वाली संज्ञानात्मक 81
और मनोविश्लेषणात्मक विधियाँ
(Cognitive and Psychoanalytical Techniques in Counselling)

14. परामर्श में निहित व्यावहारिक मुद्दे 88
(Practical Issues Involved in Counselling)

15. सामाजिक वैयक्तिक कार्य में साक्षात्कार 94
(Interviewing in Social Case Work)

16. साक्षात्कार और संप्रेषण 102
(Interviewing and Communication)

17. साक्षात्कार कौशल तथा तकनीकें 113
(Interviewing Skills and Techniques)

18. सामाजिक वैयक्तिक कार्य में अभिलेखन और प्रलेखन/ दस्तावेज 126
(Recording and Documentation in Social Case Work)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

वैयक्तिक कार्य एवं परामर्श : व्यक्तियों के साथ कार्य करना

M.S.W.-7

(Case Work and Counselling: Working with Individuals)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट: *सभी पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

अनुभाग-I

प्रश्न 1. उपयुक्त उदाहरणों के साथ बीस्टेक द्वारा दिए गए वैयक्तिक कार्य और सेवार्थी संबंध के सिद्धांत का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-29, 'वैयक्तिक कार्य-सेवार्थी संबंध के सिद्धांत'

अथवा

परामर्श के सैद्धांतिक ढाँचे पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-62, 'परामर्श के सिद्धांत और प्रतिरूप', पृष्ठ-67, प्रश्न 6

प्रश्न 2. अभिलेख क्या है? सामाजिक वैयक्तिक कार्य में प्रलेखन और अभिलेख के महत्त्व पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-78, पृष्ठ-126, 'परिचय', 'सामाजिक वैयक्तिक कार्य में अभिलेखन और प्रलेखन'

अथवा

सामाजिक वैयिक्तक कार्य प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-42, 'सामाजिक वैयक्तिक कार्य प्रक्रिया के चरण', 'सामाजिक अध्ययन', पृष्ठ-48, प्रश्न 5, पृष्ठ-47, प्रश्न 3

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) वैयक्तिक कार्य के उपकरणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ 49, 'परिचय'

इसे भी देखें–साक्षात्कार वैयक्तिक कार्य का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य कौशल है। इसके द्वारा कार्यकर्त्ता और सेवार्थी दोनों के बीच संवाद की क्रिया होती है, जो एक उद्देश्यपूर्ण और पेशेवर गतिविधि है। साक्षात्कार के सामान्य उद्देश्य सूचनात्मक, निदानात्मक एवं चिकित्सकीय होते हैं। सामाजिक अध्ययन से साक्षात्कार के लिए जरूरी जीवन इतिहास के सम्पूर्ण एकत्रण से वैयक्तिक कार्य को समझने में तथा निर्णय लेने में सहायता मिलती है। ये निश्चित प्रशासनिक निर्णयों को सुगम बनाते हैं। चिकित्सकीय साक्षात्कार का लक्ष्य कार्यकर्त्ता द्वारा सामाजिक स्थिति या व्यक्तित्व में बदलाव लाकर, प्रभावी सामाजिक प्रणाली को प्राप्त करना है।

घरेलू दौरा की तकनीकें–घरेलू दौरे सेवार्थी को उसके जीवन में प्रत्येक स्थिति से निपटने या समस्या के महत्त्वपूर्ण पक्ष को बेहतर रूप से समझने के उद्देश्य से विशिष्ट तकनीकों का प्रयोग करते हैं–

(क) मॉडलिंग–यह किसी विर्निदिष्ट व्यवहार के लिये प्रदर्शन करना है। किसी विशेष कार्य के लिये सेवार्थी के प्रयत्नशील होने तथा उसमें कार्यवाही के लिये आवश्यक कौशलों की कमी होने पर यह विशेष उपयोगी है। ऐसी स्थिति में माडलिंग में यह दर्शाना शामिल हो सकता है कि कोई कैसे अलग-अलग स्थितियों में प्रतिक्रिया करता है। विजिटर द्वारा एक बार व्यावहारिक माडलिंग किये जाने के बाद सेवार्थी को वह व्यवहार करने देना चाहिये। इससे सुनिश्चित होता है कि सेवार्थी ने समझ लिया कि क्या मॉडल दिया गया तथा व्यवहार को विजिटर के व्यवहार से मिलाया जा सकता है।

(ख) भूमिका निर्वाह–गृहभ्रमण में वास्तविक जीवन की भूमिका होती है ताकि सेवार्थी को कठिन स्थिति से निपटने के लिये कौशलों और आत्मविश्वास को पाने में मदद मिल सके। यह तकनीक व्यक्ति को नयेपन के कारण सकारात्मक होने में कठिनाई की स्थिति में उपयोगी है।

(ग) उदाहरणों का उपयोग–अन्य लोगों के साथ संव्यवहार में उदाहरणों का उपयोग एक सामान्य दैनिक घटना है। इनका प्रयोग किसी दूसरे के सामने कुछ स्पष्ट करने, वर्णन करने या सिखाने में

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

किया जाता है। होम विजिटर को सेवार्थी के लिए वास्तविक व प्रासंगिक और उपयुक्त उदाहरण प्रयोग करने चाहिए, क्योंकि इनके प्रयोग से सेवार्थी ऐसी स्थिति में सहज व संतुष्ट महसूस करता है।

(ख) भारत में वैयिक्तक कार्य अभ्यास के लिए प्रासंगिकता और चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'भारत में सामाजिक वैयक्तिक कार्य का अभ्यास', पृष्ठ-41, प्रश्न 1

(ग) वैयक्तिक कार्य अभ्यास में आवश्यक साक्षात्कार कुशलताओं के बारे में लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-50, 'साक्षात्कार के दौरान वैयक्तिक कार्य द्वारा प्रयुक्त कौशल'

(घ) अपने क्षेत्र अनुभव से सामग्री और प्रक्रिया अभिलेखन की संरचना के बारे में बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-129, 'अभिलेखन प्रक्रिया'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(d) lkekfd oSfDrd dk;Zl aFkk **(Agency) की विशेषताएं क्या हैं?**

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-23, प्रश्न 3

(ख) परामर्श के विभिन्न लक्ष्यों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-62-63, 'परामर्श के उद्देश्य'

(ग) किन्हीं दो मनोविश्लेषणात्मक तकनीकों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-84, 'कुछ मनोविश्लेषणात्मक विधियां'

(घ) व्यक्तियों के बीच अप्रभावी नकल स्वरूपों के क्या कारण हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-11, 'समस्या का सामना करने में विफलता'

(ङ) अभिलेखन के विभिन्न उद्देश्यों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-126, 'वैयक्तिक अभिलेख और प्रलेखन का प्रयोजन और कार्य'

(च) वैयक्तिक कार्य अभ्यास को एक कौशल के रूप में सुनकर समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-108, 'सक्रिय श्रवण'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पर लघु टिप्पणियां लिखिए–

(क) स्वतंत्र संघीय विधि

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-84, 'स्वतंत्र साहचर्य विधियाँ'

(ख) प्रश्नों के प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-124, प्रश्न 3

(ग) बाढ़ (Flooding)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-77, 'आप्लावन (Flooding)'

(घ) पैराफ्रासिंग (Paraphrasing)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-171, 'मूल्यांकन और समापन अवस्था'

(ङ) संचार के प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-103, 'संप्रेषण के प्रकार'

(च) सारांश अभिलेखन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-128, 'अभिलेख (Summary)'

(छ) सुदृढ़ीकरण

उत्तर–सुदृढ़ीकरण का अर्थ संबंधों को मजबूत बनाना है। इसके अन्तर्गत समस्याओं के बारे में बात करना, भावनाओं का अदान-प्रदान करना आदि के द्वारा वैयक्तिक कार्य संबंधों को सुदृढ़ बनाना होता है। सेवार्थी को उसकी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहन देने पर कार्यकर्त्ता और सेवार्थी के मध्य संबंध मजबूज होता है। इसमें किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया का वर्णन करने की सिथितियों की संभावना बढ़ जाती है। सुदृढ़ीकरण को व्यवहार के प्रभाव के आधार पर परिभाषित किया गया है, इससे व्यवहार बढ़ जाता है तथा मजबूत होता है।

(ज) सहायक तकनीकें

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-79, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

वैयक्तिक कार्य एवं परामर्श : व्यक्तियों के साथ कार्य करना
(Social Case Work and Counselling: Working with Individuals)

भारतीय संदर्भ में सामाजिक वैयक्तिक कार्य का अभ्यास
(Social Case Work Practice in Indian Context)

1

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

परिचय

सामाजिक वैयक्तिक कार्य सामाजिक कार्य का प्राथमिक माध्यम है, जो व्यक्ति तथा मानव संबंधों के समायोजन तथा विकास से संबंधित है, जैसे–जीवन में शिक्षा, आवास, चिकित्सा सुविधाएँ, सुरक्षित आर्थिक स्थितियाँ तथा धार्मिक समूह के बीच बेहतर संबंध आदि। व्यक्ति के उपयोग पर ही इन संसाधनों का समायोजन व विकास होता है। कभी-कभी आन्तरिक और बाह्य कारणों से वह इन सुविधाओं से लाभान्वित नहीं हो पाता। ऐसी स्थितियों में सामाजिक वैयक्तिक कार्य व्यक्ति के लिए सहायक होता है।

इसका आरंभ भी औद्योगिकीकरण व इसके सहगामी शहरीकरण से हुआ है। यह 1870 के उत्तरार्ध में आरंभ हुए चैरिटी संगठन सोसायटी आन्दोलनों का परिणाम है। इसके माध्यम से आप मानवीय व्यवहार की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक व्याख्या, सामाजिक समस्याओं के प्रबंधन में इसकी भूमिका तथा भारत में प्रयोक्ताओं द्वारा वैयक्तिक कार्य के प्रति दृष्टिकोण आदि समझने में समर्थ होंगे।

अध्याय का विहंगावलोकन

मनुष्य को समझना

मानव जीवन एक जैविक-मनोवैज्ञानिक-सामाजिक संवृत्ति है। इसका अर्थ सामाजिक जीवन में ही प्राप्त होता है। व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों को समाज के अन्य सदस्यों के साथ बाँटता है, क्योंकि व्यक्ति के विकास का निकट संबंध उसके परिवेश, आकांक्षाओं तथा अनुभवों से होता है, जिसमें क्रिया और प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति निहित होती है।

सामाजिक दृष्टि से निर्भर–मानव जीवन अनिवार्यत: असमान होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न क्षमताएँ व प्रवृत्तियाँ होती हैं। विभिन्न स्थितियों में पले-बढ़े होने के कारण उनकी रुचियाँ व उत्तरदायित्व भी पृथक होते हैं। औचित्यपूर्ण रूप से मानव उन ताकतों का अनुमान लगा सकता है, जिनसे मानवीय व सामाजिक संबंधों का वर्णक्रम प्रभावित होता है, किन्तु यह व्यक्तियों के मानकीकरण व उन स्थितियों को करने योग्य होता है, जिनमें वह जीता है। यद्यपि उसके जीवन में अनेक विधि संग्रहों (Codes) तथा अनुमोदनों (Sanctions) के माध्यम से सामाजिक नियंत्रण प्रव्यक्त किये जाते हैं। फिर भी वह स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता रखता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से–मानव संबंध अस्पष्ट व जटिल होते हैं। एक ओर मन अनेक कुंठित भावनाओं से ग्रसित होता है, तो दूसरी ओर वह अपने परिवेश में अंतरंग जुड़ा होता है। स्पष्ट है कि मानव स्वभाव सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं से पूर्णत: प्रभावित होता है, जो जीवन के 'अनुकूलन कारक' से कहीं अधिक होता है।

www.neerajbooks.com

औद्योगिक सभ्यता ने एक नया वातावरण सृजित किया, जिसके तहत राजनैतिक ढाँचों, सामाजिक संस्थाओं, आर्थिक संगठनों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं को संशोधित किया गया। इसने मानवीय-सामाजिक जटिलताओं में और वृद्धि की, जिसके फलस्वरूप कुंठा और तनाव की स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। व्यक्ति का चरित्र आंतरिक व पर्यावरणीय कारकों के आकर्षणों पर निर्भर करता है, जो दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करता है, किंतु जब यही परिस्थितियाँ अधिक कठिन व अनुचित होती हैं, तब कठिनाई होती है। यह भी विचारणीय है कि तथ्यों की कमी, संसाधनों की कमी, भावनात्मक कठिनाइयाँ तथा सुनियोजित सोच के अभाव में व्यक्ति के लिए अनेक मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं।

आधुनिक समाज व सामाजिक कार्य

आधुनिक समाज में सभी वर्गों के व्यक्ति तथा सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हुए उनसे सामंजस्य बिठाने में संघर्षशील हैं। औद्योगिकीकरण व शहरीकरण के विस्तार से मनुष्य की दैनिक व मूलभूत समस्याओं की संख्या बढ़ रही है, उलझ रही है। शहरी परिवार एकल की बजाय वर्धित परिवार की ओर अग्रसर हो रहे हैं। व्यक्ति मानसिक व भावनात्मक संतुलनों में, घरेलू सामाजिक, आर्थिक व नैतिक कारकों की स्थितियों में पूर्णत: प्रभावित हो रहा है।

सामाजिक संस्थाएँ, सांस्कृतिक परम्पराएँ तथा धार्मिक विचार व्यक्ति को बहुरूपदर्शी दृश्यपटल पर प्रभावित करते हैं। इन बहु-समायोजनों से व्यक्ति में अक्षमता, दुविधा, लक्ष्यहीनता, मूल्यहीनता आदि की अनुभूति व्याप्त होती है। दिशाहीन व अयोग्यता की विषादपूर्ण स्थिति अनेक प्रश्नों को खड़ा कर देती है; जैसे–कौन, क्या और क्यों? इत्यादि।

सामाजिक कार्य सहायक व्यवसायों के बीच रहकर वैयक्तिक मानव आत्मा तथा आन्तरिक क्षेत्र में, चाहे वह व्यक्ति के अन्दर हो या समूह और समुदाय के भीतर, महत्त्व की पुष्टि करता है। सामाजिक कार्यकर्त्ता व्यक्ति की ऊर्जाओं को जीवंत कर उसे गरिमायुक्त तथा उद्देश्यपूर्ण जीवन देने के उद्देश्य से कार्य करता है। इसके सभी कार्यों का अभ्यास एक लोकतांत्रिक समाज में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। पश्चिम में वैयक्तिक कार्य स्वनिर्धारण, स्वपूर्णता व व्यक्ति की सहायता के अधिकार पर बल देता है, परन्तु भारत जैसे देशों में जहाँ व्यक्ति को आत्माभिव्यक्ति एवं स्वनिर्धारण का पूर्ण अधिकार नहीं होता, जिससे व्यक्ति अपना निजी जीवन संतोषपूर्वक बिताने में सक्षम होता है, यद्यपि भारत में समूह की प्राथमिकता का महत्त्व होता है, किंतु व्यक्ति की वैयक्तिकता का अधिकार नहीं होता।

सामाजिक वैयक्तिक कार्य तथा वैयक्तिक व्यवहार

सामाजिक कार्य मानवीय संवेदना की प्रवृत्ति से जुड़ी सहायता तथा दान की क्रिया है, जो एक सराहनीय गुण है, किंतु समाज के कुछ वर्गों ने भौतिक वस्तुओं के रूप में उन जरूरतमंदों को सहायता दी, जिनकी अक्षमता एवं साधनहीनता के लिए वे स्वयं उत्तरदायी थे।

सामाजिक समस्याओं की प्रकृति द्वारा यह एहसास हुआ कि व्यक्ति पूर्णरूप से अपनी स्थिति के लिए जिम्मेदार नहीं होता, बल्कि कुछ अनियंत्रित कारक होते हैं। अत: सामाजिक न्याय की समग्र सोच के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने विवेकानुसार उपयुक्त अवसर व विकास की सेवाओं को स्वीकार करने का स्वतंत्र औचित्य है, जो मानवीय व्यक्तित्व की गरिमा तथा उच्चतम लोकतांत्रिक आदेशों के अनुरूप माना जाता है।

भारत में सामाजिक वैयक्तिक कार्य का अभ्यास

भारत के संदर्भ में सामाजिक वैयक्तिक कार्यकर्त्ता के अनुसार इस कार्य का अभ्यास केवल लोकतांत्रिक समाज में ही सफल हो सकता है, क्योंकि लोकतंत्र का अर्थ स्वतंत्र तथा आत्मपूर्णता है। भारतीय संस्कृति में आत्मपूर्णता व आत्म-अभिव्यक्ति सामूहिक मानकों की अनुरूपता की अवधारणा के साथ चलती है, क्योंकि यहाँ व्यक्ति अपने समूह से जुड़ा एक भागीदार सदस्य है। समाज उसे स्वयं पर अंकुश रखना तथा दूसरे सदस्यों को स्वीकार्य होने के लिए किन गुण-दोषों को अपनाना चाहिए, यह सिखाता है। अतएव व्यक्ति को वैश्विकता अथवा आत्म-निर्धारण का अधिकार नहीं होगा।

भारतीय परम्पराएँ अधिकार की अवधारणा को महत्त्व नहीं देतीं। ये अपने कर्त्तव्यों व धर्म व्यवस्था से अपनी खुद की प्रगति सुरक्षित करती हैं और यही व्यवस्था इसे पश्चिम से अलग करती है, क्योंकि वहाँ अधिकारों को प्रमुखता दी जाती है, जो शारीरिक रूप से सत्ता व सुख है तथा कर्त्तव्य व्यक्ति के वे ऋण हैं, जो सभी सजीव वस्तुओं के प्रति देनदार हैं।

सामाजिक वैयक्तिक कार्य में देखा गया है कि व्यक्ति की जरूरतें भौतिक आवश्यकता तक ही सीमित नहीं होती हैं, न ही इससे मानव की प्रसन्नता निश्चित होती है। इससे केवल प्रसन्नता की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, किंतु व्यक्ति वास्तव में इनसे खुश रहेगा या उसकी इच्छा मात्र ही पूरी होगी, यह निश्चित नहीं है। अधिकारों से मानव की भावनात्मक आवश्यकताएँ तभी सुनिश्चित होंगी, जब व्यक्ति कर्त्तव्य की अवधारणा पर ध्यान केन्द्रित करेगा। जैसे कैंसर के रोगी को अच्छी चिकित्सा सुविधा तो मिल सकती है, किन्तु यह परिवार का सहयोग-प्रेम का अधिकार सुनिश्चित नहीं कर सकता। यही स्थिति एक वृद्ध के साथ भी है कि क्या उसे अपने बच्चों का प्यार पाने का अधिकार है। वैयक्तिक कार्यकर्त्ता के रूप में जब व्यक्ति किसी मानसिक रोगी और उसके परिवार के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बीच सामंजस्य बनाने के लिए उसे प्रोत्साहित करता है कि परिवार बीमार सदस्य के कल्याण को अपना कर्तव्य समझकर उसके प्रति वास्तविक रुचि दिखाए और यदि व्यक्तिवाद को प्रोत्साहित किया जाता है, तो वैयक्तिक कार्यकर्त्ता को उनके आत्मनिर्धारण में हस्तक्षेप कर आत्मस्वीकार्यता के तहत दूसरों की देखभाल भी करने के लिए प्रेरित करना होगा। कार्यकर्त्ता के लिए भारत में पारवारिक समर्थन जुटाना अपेक्षाकृत आसान है, क्योंकि समाजीकरण आवश्यकता के समय अपनों के प्रति कर्त्तव्य का निर्वाह करने के लिए किया जाता है।

सेवार्थी को भौतिक सुखों के साथ भावनात्मक सुख-सुविधाओं को पूरा करना वैयक्तिक कार्य की एक व्यापक अवधारणा है, जैसे किसी अक्षम व्यक्ति की सहायता हेतु पारिवारिक सहायता जुटा लेना, क्योंकि सामाजिक प्रोत्साहन सदैव बीमार, वृद्ध, कमजोर और अक्षम व्यक्तियों को ही प्राप्त होता है, किंतु व्यक्तिवाद पर बल देने की भावना में यह अनुभूति समाप्त हो जाती है। यही कारण है कि पश्चिम में परिवार को सामाजिक इकाई के रूप में नष्ट कर दिया गया। कर्त्तव्य भाव पर निजी पूर्णता की इच्छा का परिणाम सामाजिक विध्वंस के रूप में हो सकता है।

भारतीय संस्कृति में परिवार एक मूल इकाई के रूप में हर स्थिति में व्यक्ति का समर्थन करता है तथा कर्तव्य की अवधारणा पर जोर देता है, किंतु इसका आशय यह नहीं है कि व्यक्ति स्वयं को सत्ताहीन व अप्रासंगिक समझकर किसी समूह या सामर्थ्यवान व्यक्ति पर अवलम्बित हो जाये, अपितु वह स्वयं को अपने साथियों के साथ वृहत समाज में अपनी तर्कशक्ति विकसित कर अपनी स्थिति को दृढ़ करे।

प्रतिस्पर्धात्मक समाज में व्यक्ति अपने स्वार्थ को नियंत्रित नहीं कर पाता और दूसरे के कल्याण हेतु वह उदासीन होकर निजी फायदों के लिए सोचता है, वहाँ वैयक्तिक कार्यकर्त्ता को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है।

वैयक्तिक कार्य अभ्यास का स्वदेशीकरण

हमारे समाज में सामाजिक वैयक्तिक कार्यकर्त्ता को एक सेवार्थी के रूप में तथा उसके परिवार को उसके अनुकूल चलना होता है। यहाँ व्यक्ति को सामूहिक मापदंडों के अनुसार चलना होता है, जिस कारण वैयक्तिक कार्य की स्थितियों में व्यक्ति का उसकी वास्तविकताओं से सामंजस्य बाधित होता है। फिर भी वैयक्तिक कार्यकर्त्ता नई वास्तविकता के साथ उसके दैनिक जीवन में नये विचारों व मूल्यों को समेकित कर सकता है। अतः समूह के मानदंड व मानव के रूप में उसकी भूमिका, उसके कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए परिवार व समाज को लाभान्वित करता है।

कार्यकर्त्ता निःस्वार्थ व अस्वीकार्यता सहित सेवार्थी के साथ मिलकर कर्त्तव्यों के निर्वाह में सहायता करता है। यद्यपि सेवार्थी नैतिक सिद्धांत के साथ पहचान बना सकता है, फिर भी ठोस सिद्धांत निराकार से अधिक अर्थपूर्ण होते हैं। सेवार्थी और कार्यकर्त्ता रिश्तों के सूक्ष्म रूप से एक-दूसरे को साथी की तरह मानते हैं, जो कि शब्दों के सम्बोधन से भावनात्मक निकटता नहीं दर्शाता अपितु कार्य और कर्त्तव्यों के माध्यम से साथ होने का प्रयास परिलक्षित होता है।

भारत में वैयक्तिक कार्य के अभ्यास की सक्रियता में हमारी संस्कृति व परम्परा का महत्त्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि व्यक्ति ने अपने बड़ों से ही अच्छे-बुरे का ज्ञान सीखा है इसलिए इसे पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। अतः गलत और सही के बजाय सेवार्थी को निर्णय प्रक्रिया का प्रयास सही भावना और वातावरण में करना चाहिए। लोकतांत्रिक समाज में जहाँ आत्मनिर्भरता का अभाव है, वहाँ किसी भी समस्या के समाधान में वे दुविधाग्रस्त हो जाते हैं।

भारत में वैयक्तिक कार्य में सक्रिय प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसके अनुसार कार्यकर्त्ता को यदा-कदा सेवार्थी के निवास पर भी जाना होता है। यदि सेवार्थी महिला है, तो यह अत्यावश्यक हो जाता है कि कार्यकर्त्ता को उसकी सहायता हेतु तथा उसे जुड़ी बाधाओं को दूर करने के लिए उसके घर जाना पड़े। सामाजिक वैयक्तिक कार्यकर्त्ता सेवार्थी से जुड़ी हर समस्या से परिचित होता है। परिवार अपने सदस्यों के लिए निर्णय का अधिकार रखता है, किंतु इस संदर्भ में सेवार्थी को अपने कार्यकर्त्ता से बात करने के लिये उपयोगी स्थितियाँ नहीं प्राप्त होतीं, यहाँ वह सक्रिय प्रस्ताव के माध्यम से सेवार्थी की भावनाओं, विचारों आदि को स्पष्ट करता है तथा उसमें अपेक्षित वृद्धि होती है। कार्यकर्त्ता द्वारा सेवार्थी को सुझावों व विकल्पों पर राय देने के लिए उसे प्रोत्साहित किया जाता है।

वैयक्तिक कार्य के अभ्यास में यह देखना आवश्यक है कि सेवार्थी की समस्या में कौन-सी तकनीकें व विधियाँ उपयुक्त रहेंगी। इससे उसके विश्वास को बढ़ावा मिलेगा तथा किसी विशेष प्रस्ताव में न जाकर सेवार्थी व उसके परिवार की गरिमा व सामर्थ्य के अनुसार ही कार्य किया जा सकेगा ताकि किसी प्रकार का शोषण न हो, क्योंकि शोषण की क्रिया मानव गरिमा के विरुद्ध है। कार्यकर्त्ता को शोषणकर्त्ता व पीड़ित दोनों के साथ सामंजस्य रखना होता है ताकि वह भगवदगीता की अवधारणा के माध्यम से उनकी आन्तरिक गरिमा को पुनः स्थापित कर सके। वैयक्तिक कार्यकर्ता धर्म-दर्शन के माध्यम से व्यक्ति में स्व-जागरूकता का बोध कराता है।

भारतीय संस्कृति में 'कर्म' का योगदान अमूल्य है। व्यक्ति के सारे कार्य 'कर्म' प्रधान हैं। तकनीकी रूप से इसका अर्थ कार्यों का प्रभाव होता है, क्योंकि व्यक्ति यह जानता है कि जो कुछ भी उसके साथ हो रहा है, वह उसके कर्मों का परिणाम है। अतः इस अवधारणा के अनुसार यदि चीजें होनी हैं, तो व्यक्ति में सकारात्मक सोच का होना अति आवश्यक है, जिससे उसका जीवन बेहतर हो पाएगा।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अतएव वैयक्तिक कार्यकर्त्ता को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। एक ओर उन पारम्परिक स्थितियों को देखना होता है, जिसमें व्यक्ति तनावग्रस्त होता है। दूसरी ओर नये विचारों व तरीकों का प्रतिपादन कर उसके जीवन को सफल बनाना होता है, अतः कार्यकर्त्ता को समाज की भलाई के लिए परिवर्तन की प्रक्रिया में सशक्त भागीदार बनना चाहिए।

स्वपरख अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में सामाजिक वैयक्तिक कार्य की उत्पत्ति तथा मानवीय संबंधों में सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विचारों की व्याख्या कीजिये।

उत्तर–सामाजिक वैयक्तिक कार्य भारत में औद्योगीकरण अथवा शहरीकरण के साथ ही जन्मा है। जब शहरीकरण के माध्यम से भारत में पश्चिमी सभ्यता ने पैर पसारे तथा संयुक्त परिवारों पर निजी दायरों की पकड़ मजबूत होती गई 1870 के दशक के उत्तरार्ध में भारत में 'चैरिटी संगठन सोसायटियों' के आन्दोलनों ने व्यापक रूप से समाज को तथा सामाजिक गतिविधियों को प्रभावित किया था। तत्कालीन आधुनिक समाज में सामाजिक समस्याओं तथा व्यक्तियों की कठिनाइयों के प्रबंधन तथा वैयक्तिक कार्य की भूमिका का अनुभव तेजी से पनपने लगा और व्यक्ति को उसके सामाजिक समायोजन तथा विकास में सहायक बना। इस प्रकार औद्योगिक सभ्यता ने सामाजिक वैयक्तिक कार्य का नया रूप समाज को दिया।

सामाजिक रूप से देखें, तो निःसंदेह सभी व्यक्ति एक-दूसरे से प्रत्येक रूप में अलग होते हैं। उनकी क्षमताएं, रुचियाँ, लक्ष्य तथा उत्तरदायित्व तथा आदतें भी भिन्न होती हैं। व्यक्ति औचित्यपूर्ण रूप से बाहरी मानवीय सामाजिक संबंधों के कार्यक्रम को प्रभावित करने वाली तथा आन्तरिक स्थितियों का अनुमान तो लगा सकता है, किन्तु व्यक्तियों का मानकीकरण नहीं कर सकता, न ही उन विरोधी सामाजिक परिस्थितियों को नियंत्रित कर सकता है, जिनमें वह रहता है। अतः सामाजिक वैयक्तिक कार्यकर्त्ता के माध्यम से वह सामाजिक जीवन के संदर्भ में अपने आत्मविश्वास को दृढ़ करता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से ये संबंध अत्यन्त जटिल, अप्रत्यक्ष और अदृश्य होते हुए भी स्वाभावगत व निजी होते हैं। व्यक्ति का अपने सामाजिक संबंधों व परिवेश से अंतरंग संबंध होता है। आधुनिक जीवन की गतिशीलता तथा सामाजिक ढाँचे की अंतर्निहित अस्थिर कुंठा व तनाव मानसिक व्यवस्था को आकर्षित करते हैं, जिससे सामाजिक कार्यकर्त्ता मनोवैज्ञानिक रूप से दोनों में सामंजस्य (व्यक्ति तथा समाज) बनाता है, जिसके माध्यम से सेवार्थी को स्वयं को बदलने के लिए, सुनियोजित सोच को विकसित करना होता है। मनोवैज्ञानिक व नैतिक कारक बहुसमायोजन में अपना विशेष योगदान देते हैं, जैसे–व्यक्ति की अक्षमता, उसमें विषादपूर्ण अनुभूति तथा दिशाहीन खोज से उसका उचित मार्गदर्शन करना सामाजिक वैयक्तिक कार्यकर्त्ता का प्रमुख कर्त्तव्य बन जाता है। इस वृहद समाज में अपनी तर्कशक्ति के द्वारा वह जीवन में नये मूल्यांकन कर सकता है।

प्रश्न 2. सामाजिक वैयक्तिक कार्य का अभ्यास केवल लोकतांत्रिक समाज में सफलतापूर्वक किया जा सकता है। क्यों?

उत्तर–भारतीय समाज में व्यक्ति केवल भागीदार सदस्य के रूप में अपने समूह व समाज से जुड़ा रहता है, क्योंकि हमारे देश में समूह को व्यक्ति से अधिक प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ उसे वैयक्तिकता व आत्माभिव्यक्ति का अधिकार नहीं होता, क्योंकि आत्मपूर्णता व अभिव्यक्ति सामूहिक मानकों की अनुरूपता की अवधारणा के साथ-साथ चलते हैं। अतः व्यक्ति को स्वयं निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं होता, उसका समूह ही उसे सिखाता है कि स्वयं पर कैसे अंकुश रखे तथा सामाजिक मानदंडों के अनुकूल ही चले। सामाजिक वैयक्तिक कार्य के अभ्यास में भौतिक सुखों के साथ इसकी (व्यक्ति) भावनात्मक आवश्यकताओं तथा अन्य सुख-सुविधाओं को पूरा किया जाता है। इस प्रकार का सामाजिक कार्य एक लोकतांत्रिक समाज में सफलतापूर्वक किया जा सकता है, जो मानवीय व्यक्तित्व की गरिमा तथा उच्चतम लोकतांत्रिक आदर्शों के अनुरूप माना जाता है, क्योंकि यहाँ पर कार्यकर्त्ता कार्य की अवधारणा को प्राथमिकता देते हुए तथा सामाजिक व सांस्कृतिक सामूहिक मानदंडों को प्रोत्साहित करते हुए पारिवारिक समूह के या समुदाय के भीतर की व्यक्ति की ऊर्जाओं तथा उद्देश्यों-मूल्यों को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न करने का कार्य करता है, जिससे व्यक्ति गरिमायुक्त जीवन व्यतीत करने में सक्षम हो। इस संबंध में कार्यकर्त्ता एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य की अवधारणा पूरी करता है, जब वह किसी विशिष्ट समस्या या अक्षम व्यक्ति की समस्या हेतु वह पारिवारिक या अन्य सहायता जुटा लेता है। समाज में सदैव ही वंचित और कमजोर, व्यक्तियों, समुदायों या परिवार की सहायता के लिए प्रोत्साहन मिला है, किंतु यदि व्यक्तिवाद के रूप से देखें, तो इससे दूसरों के प्रति उत्तरदायित्व की अनुभूति समाप्त हो जाती है, जैसे व्यक्ति किसी मानसिक रोगी और उसके परिवार के बीच सामंजस्य लाने के लिए उसके परिवार को प्रोत्साहित करता है कि बीमार सदस्य के प्रति वह कर्त्तव्यों को समझे, उसके प्रति अपनी स्वीकार्यता दे, प्रेम से उचित देखभाल करे। यही भावना अतिव्यक्तिवाद में बदल जाती है, तो कार्यकर्त्ता की भूमिका में वह आत्मनिर्धारण के द्वारा हस्तक्षेप करते हुए आत्मस्वीकार्यता का आसरा लेते हुए रोगी की देखभाल करती है। भारतीय समाजीकरण व्यवस्था या लोकतांत्रिक व्यवस्था में शारीरिक व भावनात्मक आवश्यकताओं को जुटाना, पारिवारिक समर्थन, अपनों के प्रति कर्त्तव्यों का निर्वाह इत्यादि कार्यकर्त्ता के लिए अपेक्षाकृत आसान होते हैं।

www.neerajbooks.com